शबद हजारे

माझ महला ५ चउपदे घरु १ ॥

मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥

बलिप करे चात्रकि की नआिई ॥

त्रखिा न उतरै सांतनि आवै बनिु दरसन संत पआिरे जीउ ॥१॥

हउ घोली जीउ घोलघिुमाई गुर दरसन संत पआिरे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥

तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनबिाणी ॥

चरिु होआ देखे सारंगिपाणी ॥

धंनु सु देसु जहा तूं वसआि मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ॥२॥

हउ घोली हउ घोलघिुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥

इक घड़ी न मलिते ता कलजिुगु होता ॥

हुणकिद मिलीऐ प्रअि तुधु भगवंता ॥

मोहरैणनि वहिावै नीद न आवै बनिु देखे गुर दरबारे जीउ

॥३॥

हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर दरबारे जीउ ॥१॥

रहाउ ॥

भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ ॥

प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ ॥

सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ॥४॥

हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ ॥

रहाउ ॥१॥८॥

धनासरी महला १ घरु १ चउपदे

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति

अजूनी सैभं गुरप्रसादि॥

जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार ॥

दूख विसारणु सेविआ सदा सदा दातारु ॥१॥

साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु ॥१॥

रहाउ ॥

अनदिनु साहिबु सेवीऐ अंति छडाए सोइ ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइ ॥२॥

दइआल तेरै नामि तिरा ॥

सद कुरबाणै जाउ ॥१॥

रहाउ ॥

सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोइ ॥

ता की सेवा सो करे जा कउ नदरि किरे ॥३॥

तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥

सा वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि रहां ॥

दूजा नाही कोइ जिसु आगै पिआरे जाइ कहा ॥१॥

रहाउ ॥

सेवी साहिबु आपणा अवरु न जाचंउ कोइ ॥

नानकु ता का दासु है बिंदि बिंदि चुख चुख होइ ॥४॥

साहिब तेरे नाम विटहु बिंदि बिंदि चुख चुख होइ ॥१॥

रहाउ ॥४॥१॥

तिलंग महला १ घरु ३

१ੴ सतिगुर प्रसादि॥

इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि रंगाए ॥
मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाए ॥१॥
हंउ कुरबानै जाउ महिरवाना हंउ कुरबानै जाउ ॥
हंउ कुरबानै जाउ तिना कै लैनि जो तेरा नाउ ॥
लैनि जो तेरा नाउ तिना कै हंउ सद कुरबानै जाउ ॥१॥
रहाउ ॥
काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ ॥
रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न डीठ ॥२॥
जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि ॥
धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि ॥३॥
आपे साजे आपे रंगे आपे नदरि करेइ ॥
नानक कामणि कंतै भावै आपे ही रावेइ ॥४॥१॥३॥

तिलंग मः१ ॥
इआनड़ीए मानड़ा काइ करेहि ॥
आपनड़ै घरि हरि रंगो की न माणेहि ॥
सहु नेड़ै धन कमलीए बाहरु किआ ढूढेहि ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

भै कीआ देह सिलाईआ नैणी भाव का करि सीगारो ॥
ता सोहागणि जाणीऐ लागी जा सहु धरे पिआरो ॥१॥
इआणी बाली किआ करे जा धन कंत न भावै ॥
करण पलाह करे बहुतेरे सा धन महलु न पावै ॥
विणु करमा किछु पाईऐ नाही जे बहुतेरा धावै ॥
लब लोभ अहंकार की माती माइआ माहि समाणी ॥
इनी बाती सहु पाईऐ नाही भई कामणि इआणी ॥२॥
जाइ पुछहु सोहागणी वाहै किनी बाती सहु पाईऐ ॥
जो किछु करे सो भला करि मानीऐ हिकमति हुकमु चुकाईऐ ॥
जा कै प्रेमि पदारथु पाईऐ तउ चरणी चितु लाईऐ ॥
सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईऐ ॥
एव कहहि सोहागणी भैणे इनी बाती सहु पाईऐ ॥३॥
आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ अउरु कैसी चतुराई ॥
सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै कामणि निउ निधि पाई ॥
आपणे कंत पिआरी सा सोहागणि नानक सा सभराई ॥
ऐसै रंगि राती सहज की माती अहिनिसि भाइ समाणी ॥
सुंदरि साइ सरूप बिचखणि कहीऐ सा सिआणी ॥४॥२॥४॥

सूही महला १ ॥

कउण तराजी कवणु तुला तेरा कवणु सराफु बुलावा ॥

कउणु गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा ॥१॥

मेरे लाल जीउ तेरा अंतु न जाणा ॥

तूं जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा तूं आपे सरब समाणा ॥१॥

रहाउ ॥

मनु ताराजी चितु तुला तेरी सेव सराफु कमावा ॥

घट ही भीतरि सो सहु तोली इन बिधि चितु रहावा ॥२॥

आपे कंडा तोलु तराजी आपे तोलणहारा ॥

आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥३॥

अंधुला नीच जाति परदेसी खिनु आवै तिलु जावै ॥

ता की संगति नानकु रहदा किउ करि मूड़ा पावै ॥४॥२॥९॥

ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि॥

रागु बिलावलु महला १ चउपदे घरु १ ॥

तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई ॥
जो तू देहि सु कहा सुआमी मै मूरख कहणु न जाई ॥१॥
तेरे गुण गावा देहि बुझाई ॥
जैसे सच महि रहउ रजाई ॥१॥
रहाउ ॥
जो किछु होआ सभु किछु तुझ ते तेरी सभ असनाई ॥
तेरा अंतु न जाणा मेरे साहिब मै अंधुले किआ चतुराई ॥२॥
किआ हउ कथी कथे कथि देखा मै अकथु न कथना जाई ॥
जो तुधु भावै सोई आखा तिलु तेरी वडिआई ॥३॥
एते कूकर हउ बेगाना भउका इसु तन ताई ॥
भगति हीणु नानकु जे होइगा ता खसमै नाउ न जाई ॥४॥१॥

बिलावलु महला १ ॥
मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि नावा ॥
एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा ॥१॥
मनु बेधिआ दइआल सेती मेरी माई ॥
कउणु जाणै पीर पराई ॥

हम नाही चिंति पराई ॥१॥

रहाउ ॥

अगम अगोचर अलख अपारा चिंता करहु हमारी ॥

जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा घटि घटि जोति तुम्हारी ॥२॥

सिखि मति सभ बुधि तुम्हारी मंदरि छावा तेरे ॥

तुझ बिनु अवरु न जाणा मेरे साहिबा गुण गावा नित तेरे ॥३॥

जीअ जंत सभि सरणि तुम्हारी सरब चिंत तुधु पासे ॥

जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की अरदासे ॥४॥२॥॥